झाबुआ.आलीराजपुर पत्रिका

थांदला और रामा क्षेत्र के दो गांव

कलेक्टर की पहल के बाद पहुंची टीम

बच्चों को लाए अस्पताल, दो को किया इंदौर रैफर

मिले 27 फ्लोरोसिस पीड़ित

अहद खान @ झाबुआ
jhabua@patrika.com

जिले में फ्लोरोसिस नियंत्रण कार्यक्रम पर करोड़ों रुपए खर्चने के बाद भी यह असफल साबित हो रहा है। इसका ताजा प्रमाण रामा और थांदला ब्लॉक के दो गांवों में मिला। कलेक्टर की पहल के बाद गांवों में गई प्रशासनिक टीम को एक साथ 27 लोग फ्लोरोसिस प्रभावित मिले। सभी को बुधवार को जिला अस्पताल लाया गया। इनमें से 5 की हड्डियों पर असर हो चुका है। दो बच्चों की हालत ज्यादा खराब होने पर इंदौर रैफर किया गया।

कलेक्टर जयश्री कियावत को सूचना मिली थी कि रामा ब्लॉक के गांव मियाटी और थांदला ब्लॉक के गांव जसोदा खुमजी में लोग फ्लोरोसिस से प्रभावित हो रहे हैं। इस पर मंगलवार को एक टीम बनाकर गांवों में भेजी गई। टीम के जाने से पता चला कि यहां फ्लोराइड नियंत्रण कार्यक्रम में जबरदस्त लापरवाही बरती गई। 2007-08 में कार्यक्रम शुरू होने के बावजूद यहां कई जलस्रोतों में फ्लोराइड युक्त पानी आ रहा है। इसे पीने से गांव वाले बीमार हो रहे हैं। टीम ने यहां 27 लोगों को चिह्नित किया। इनमें से ज्यादातर बच्चे हैं। मियाटी में 14 और जसोदा खुमजी में 13 बीमार मिले।

स्थिति खराब

जिला अस्पताल लाए गए 27 पीड़ितों की जांच डॉ. संजय मालवीय, डॉ. एसएस गर्ग और डॉ. विजय निनामा ने की। इनमें से गांव जसोदा खुमजी के 15 साल के दो बच्चों की स्थिति काफी खराब पाई गई। यहां के लड़के कुंवरसिंह पिता अनसिंह और लड़की मत्थु पिता केकड़िया के पैरों की हड्डियां पूरी तरह से टेढ़ी हो चुकी हैं। दोनों को उपचार के लिए इंदौर के एमवाय हॉस्पिटल में भर्ती किया गया है। दोनों सहित 5 बच्चों की हड्डियों पर बीमारी का असर होने पर उनका एक्स-रे किया गया। बाकी को दवाइयां दी गई।

करोड़ों का प्रोजेक्ट

शासन ने जिले में फ्लोराइड प्रभावित गांवों में साफ पानी पहुंचाने के लिए 2007-08 में योजना शुरू की थी। इसके लिए उस समय 3345.73 लाख रुपए की स्वीकृति दी गई। सैकड़ों करोड़ रुपए की योजना दिसंबर 2012 में पूरी होना है, लेकिन काम पूरा होने के ठीक एक साल पहले गांवों में फ्लोरोसिस पीड़ित मिल रहे हैं। योजना पीएचई के पास है। पीएचई को गांवों में फ्लोराइड प्रभावित जलस्रोतों की पहचान कर उन्हें बंद करना है और उचित पानी के लिए व्यवस्था करना है। जिले के 165 गांवों में योजना के तहत काम चल रहा है।

गंभीर बीमारी है फ्लोरोसिस

फ्लोरोसिस शरीर में कैल्शियम को प्रभावित करने वाली बीमारी है। पीने के पानी में फ्लोराइड की मात्रा अधिक होने पर और लगातार इस तरह के पानी का सेवन करने से कैल्शियम और आयरन की मात्रा शरीर में कम हो जाती है। इससे बीमार के दांत पीले पड़ने लगते हैं और उन पर निशान बन जाते हैं। इसके साथ ही कमजोरी भी आने लगती है। ज्यादा दिनों तक फ्लोराइड युक्त पानी पीने से पैरों और हाथों की हड्डियों में विकृति पैदा हो जाती है। इसका प्रारंभिक तौर पर इलाज संभव है, लेकिन एडवांस स्टेज में जाने के बाद सर्जरी ही एकमात्र उपाय बचता है।

एक-दूसरे पर डाल रहे जिम्मेदारी

मामले में अब सरकारी विभाग अपनी गलती मानने की बजाए एक-दूसरे को जिम्मेदार ठहरा रहे हैं। स्वास्थ्य विभाग कह रहा है कि लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग की जिम्मेदारी है कि गांवों में फ्लोराइड प्रभावित जलस्रोतों का चयन कर उन्हें बंद करे, लेकिन फिर भी बीमारी सामने आ रही है। दूसरी ओर पीएचई के अधिकरियों का कहना है कि उन्होंने अपना काम कर लिया। ये पहले से बीमार लोग हो सकते हैं। इनकी पहचान की जवाबदारी स्वास्थ्य विभाग की है, लेकिन उन्होंने काम नहीं किया।

1. जिला अस्पताल लाए गए फ्लोरोसिस प्रभावित लोग।
2. अत्यधिक बीमार दो बच्चे जिनके पैरों की हड्डियां टेढ़ी हो गई। इन्हें इंदौर रैफर किया गया।

ये हैं प्रभावित

मियाटी (थांदला ब्लॉक)

नाम	उम्र
भूरसिंह तोलिया	(12)
विनय लालू	(13)
काली तोलिया	(35)
सुनीता तेरसिंह	(13)
सुमित्रा थारसिंह	(16)
रिमु सोवन	(12)
भूरा पालसिंह	(12)
अनीता मोहन	(11)
रेखा मानसिंह	(11)
कैलाश धूलिया	(12)
गन्ना तोलिया	(12)
राहुल सुरसिंह	(13)
संजू वाड़	(12)
कल्ला खुमानसिंह	(20)
प्रकाश रौतान	(14)

जसोदा खुमजी (रामा ब्लॉक)

मत्थु केकड़िया	(15)
अनिल अनसिंह	(11)
मुन्ना पुनिया	(7)
उमेश पुनिया	(9)
सतेश जसोदा	(11)
रमेश रौतान	(8)
कुंवरसिंह अनसिंह	(15)
सावित्री बहादुर	(4)
दिलीप बहादुर	(14)
बहादुर सागरिया	(9)
नंदु सागरिया	(2)

दिया है उपचार

बीमारों को दवाइयां आदि दी गई हैं। दो बच्चे अधिक प्रभावित थे, उन्हें उपचार के लिए इंदौर रैफर किया गया है। हम उपचार देने से ज्यादा क्या कर सकते हैं? पानी की व्यवस्था करना हमारा काम नहीं।

रजनी डाबर, सीएमएचओ झाबुआ

हमने किया अपना काम

हमने अपना काम पूरा कर दिया। हो सकता है पहले से बीमार लोग हों। बीमारों का पता लगाना स्वास्थ्य विभाग का काम है, फिर भी पता लगा रहे हैं कि लोग कैसे बीमार हुए।

एसके पटवा, ईई पीएचई